हिन्दी फिल्मों में चित्रित क्वीर का जीवन संघर्ष एवं समस्याएँ: एक अध्ययन

Hindi Filmon Mein Chitrit Queer ka Jeevan Sangharsh Evam Samasyayen : Ek Adhyayan

Submitted by

Abhirami C J
(20PHHIF002)

Supervisor

DR. SHOBHANA KOKKADAN
Dean, School of Arts and Social sciences
Professor& Head, department of Hindi

Synopsis Submitted to

Avinashilingam Institute for Home Science and Higher Education for Women

Coimbatore - 641 043

In Partial Fulfilment of the Requirements for the Degree of

Doctor of Philosophy in Hindi

January 2025

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध- विषय का शीर्षक 'हिन्दी फिल्मों में चित्रित क्वीर का जीवन संघर्ष एवं समस्याएँ : एक अध्ययन' है । जिसमें निम्नलिखित दृष्टियों से अध्ययन किया गया है । जैसे विषय चयन, शोध की विशिष्टता, साहित्य की समीक्षा, शोध सीमा, शोध प्रविधि, अनुसन्धान की रूपरेखा, सामग्री संकलन, हिन्दी फिल्म का विश्लेषण, हिन्दी फिल्मों में प्रतिपादित विभिन्न परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण, उपसंहार, अनुसंधान की उपलब्धियाँ, अध्ययन की नई दिशाएँ आदि शोध पद्धति पर आधारित विषयों का वस्तुनिष्ठ रूप से अध्ययन किया है ।

साहित्य समीक्षा

- हिंदी सिनेमा और लैंगिक विमर्श एल जी बी टी पहचानों का विघटन, पुष्पिंदर कौर, पंजाब विश्वविद्यालय, पत्रकारिता और जनसंचार विभाग, (२०२२)
- क्वीर पहचान की पुनर्कल्पना, चयनित हिंदी फिल्मों का एक अध्ययन । बी एस जमुना, अंग्रेजी विभाग, केरल विश्वविद्यालय, (२०२०)
- हिंदी सिनेमा में लैंगिक अल्पसंख्यकों के चित्रण : एक अध्ययन, रितेश चौधरी,, श्री रामस्वरूप मेमोरियल विश्वविद्यालय (२०१९)
- हिंदी सिनेमा में समलैंगिक विषय पर सवाल उठाना यौन प्रतिनिधित्व की राजनीति, दिव्या कवला,फिल्म अध्ययन विभाग, (२०१७)
- हिंदी कथा साहित्य में एलजीबीटीक्यू जन विविध आयाम, मधुमिता ओझा, हिंदी विभाग,प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल(२०२३)
- भारतीय फिल्म कथा में समलैंगिकता की स्थिति की एक सांकेतिक जांच, सचिन रमेश लाबडे, अंग्रेजी विभाग, सावित्रीबाई फुले विश्वविद्यालय,(२०१६)

शोध की विशिष्टता

अब तक हुए शोध कार्यों में साहित्य और सिनेमा का अंतर्संबध, कथा साहित्य में एलजीबीटीक्यू, सिनेमा में लैंगिक चित्रण, साहित्य विधाओं में चित्रित क्वीर इत्यादि का अध्ययन किया गया है । इन सभी में कहीं- कही या एक अध्याय के रूप में क्वीर विषय में बनने वाली हिंदी फिल्मों का परिचय प्रस्तुत किया गया है । डॉ. वनजा ने 'क्वीर विमर्श' के नाम से एक किताब लिख चुकी है । डॉ निम्मी ए.ए ने 'हिंदी-मलयालम साहित्य एवं सिनेमा में क्वीर विमर्श' नाम से एक पुस्तक सम्पादित किया है । हिंदी सिनेमा में क्वीर पर किसी प्रवृति विशेष पर विश्लेषणात्मक और शोधपरक अध्ययन नहीं हो पाया है । अतः मेरा शोध-कार्य इस रूप में विशेष है कि उन्नीसवीं सदी से लेकर इक्कीसवीं सदी की हिंदी सिनेमा में चित्रित क्वीर समुदाय के संघर्ष एवं समस्याओँ की दृष्टि से अध्ययन किया गया है ।

प्रेरणा एवं सामग्री स्त्रोत

हिन्दी फिल्मों में क्वीर पर शोध कार्य करने की प्रेरणा मुझे इसलिए हुआ कि :

छोटी उम्र से ही मुझे विभिन्न 'जॉनर' की फ़िल्में देखने का शौक रहा है, और इसी दौरान मेरी नज़र एल जी बी टी थीम पर आधारित फ़िल्मों पर पड़ी, जिन्होंने इस क्षेत्र में मेरी रुचि को जागृत किया । इन फ़िल्मों ने न केवल मेरे भीतर इस समुदाय के जीवन के प्रति जिज्ञासा बढ़ाई, बल्कि उनके सामने आने वाली चुनौतियों और संघर्षों को समझने की प्रेरणा भी दी । इसी अनुभव ने मुझे 'हिन्दी फिल्मों में चित्रित क्वीर का जीवन संघर्ष एवं समस्याएँ: एक अध्ययन' विषय को शोध के रूप में चुनने के लिए प्रेरित किया । समाज में क्वीर समुदाय के प्रति व्याप्त भेदभाव, अस्वीकृति, कानूनी भेदभाव, आर्थिक और सामाजिक अलगाव, शैक्षणिक संस्थानों में उत्पीड़न और मीडिया में नकारात्मक चित्रण

जैसे पहलुओं ने मेरे विचारों को गहराई से प्रभावित किया । क्वीर समुदाय के संघर्षों का मज़ाक उड़ाने या उन्हें और अधिक हाशिए पर धकेलने के बजाय, मुझे एहसास हुआ कि एल जी बी टी क्यु समुदाय की वास्तविकताओं को पहचानना और गहराई से समझना अधिक वांछनीय और महत्वपूर्ण है । इस शोध का उद्देश्य हिन्दी सिनेमा के माध्यम से क्वीर समुदाय के जीवन और संघर्षों को उजागर करना और समाज में समानता एवं जागरूकता को बढ़ावा देना है ।

सामग्री स्त्रोत

- प्राथमिक सामग्री : विभिन्न निर्देशकों द्वारा निर्देशित की गई क्वीर-केंद्रित हिन्दी फिल्में (यूट्यूब, अमेज़न प्राइम, हॉटस्टार, नेटफ्लिक्स, वीमियो ऐप)
- सहायक सामग्री : अन्य शोध कार्य, क्वीर विमर्श एवं ट्रान्स जेंडर संबंधित पुस्तकें, पत्र पत्रिकाएँ, वेबसाइट एवं सामाजिक माध्यमों के विविध एप्प ।

शोध का उद्देश्य

- हिन्दी फिल्मी दायरे में अस्मिता की तलाश : क्वीर के संदर्भ में ।
- क्वीर फिल्म के आईने में 'मानवता' को चर्चा के केन्द्र में लाना ।
- क्वीर के प्रति नज़रिया बदलना उन्हें भी इनसान के रुप में सामाजिक स्वीकृति मिलना ।
- सामाजिक नियम में बदलाव तथा मानवता पर आधारित सामाजिक स्थिति को निर्मित करना ।
- समकालीन समाज में क्वीर वर्ग की त्रासदीयों को अवगत कराना ।
- हिंदी फिल्मों में चित्रित क्वीर के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक व आर्थिक स्थितियों के आधार पर
- समाज के दृष्टिकोण में बदलाव लाना ।

- क्वीर समुदाय के विरुद्ध होनेवाली समस्याओं, संघर्षों, विसंगतियों, तनावों, व्यथाओं को तर्कसंगतता के साथ उजागर करने का एक प्रयास ।
- जेंडर या सेक्स के आधार पर सामाज द्वारा हशियेकृत किए गए लोगों की समस्याओं के सभी पक्षों को सच्चाई के साथ उजागर करना ।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में निम्नलिखित शोध-प्रविधियों का प्रयोग हुआ है ।

- विश्लेषणात्मक शोध-प्रविधि
- आलोचनात्मक शोध- प्रविधि
- तुलनात्मक शोध-प्रविधि

शोध की सीमा

जिस प्रकार किसी भी क्षेत्र में किसी का अंतिम रूप से मुकम्मल हो जाना प्रकृति की प्रगति को रोक देने जैसा होता है, उसी तरह किसी विषय में किये गये शोध को अंतिम रूप से मुकम्मल नहीं कहा जा सकता, उसके आगे की संभावना सदैव ही बनी रहती है; यही प्रगति का सूचक है । प्रस्तुत शोध विषय का शीर्षक है; 'हिन्दी फिल्मों में चित्रित क्वीर का जीवन संघर्ष एवं समस्याएँ : एक अध्ययन' । इसमें तीन विषय शामिल हैं; हिन्दी सिनेमा, क्वीर समुदाय एवं सामाजिक समस्याएँ और तीनों ही विषयों का क्षेत्र बहुत व्यापक है । जाहिर है कि तीनों ही विषयों में अलग-अलग शोध किया जा सकता है । लेकिन यहाँ शोध विषय के केंद्र में हिंदी सिनेमा को रखा गया है । जिसका क्वीर का संदर्भ लेने से एक समय-सीमा स्वाभाविक रूप से निर्धारित होती है, अर्थात 1900 से लेकर अबतक । अब यहाँ भी समस्या इस बात की है कि हिंदी फिल्म इंडस्ट्री प्रत्येक वर्ष

अमूमन 500 की संख्या में फिल्मों का निर्माण करती है। जाहिर है कि इतने वर्षों में बनीं सभी फिल्मों को शोध के लिए चयन करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन सी बात होगी ।

1971 से 2023 के बीच रिलीज़ हुई 35 हिंदी फ़िल्मों का कंटेंट विश्लेषण, लोकप्रियता, आलोचनात्मक प्रशंसा और क्वीर विषयगत प्रासंगिकता के आधार पर चुना गया है । इस तरह की फिल्मों का चयन करना बड़ा ही मुश्किल काम था, क्योंकि ऐसी फ़िल्में न तो समाज स्वीकृति हुईं और न ही अच्छा व्यवसाय कर पाईं, इसलिए यहाँ पर विवेक का सहारा लेने हेतु स्वतंत्र रहना पड़ा ।

लिहाजा कई सारी महत्वपूर्ण फिल्मों का इस शोध-प्रबंध में जिक्र न कर पाना मेरे लिए स्वाभाविक मज़बूरी बन गई। यह मेरे शोध की सीमा कही जा सकती है । मैं अपने शोध अध्ययन के आधार पर कह सकता हूँ कि इस विषय पर तमाम दृष्टियों से शोध करने की जरूरत है ।

विषय के बारे में

‘क्वीर’ दरअसल अंग्रेजी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ - कुछ अलग, अजीब, असाधारण या विचित्र है तथा इस समुदाय को अंग्रेंजी में क्वीर / एल जी बी टी कम्युनिटी के नाम से भी जाना जाता है । लेस्बियन (एल) यानी उन महिलाओं के लिए उपयोग किया जाता है जो दूसरी महिलाओं की ओर आकर्षित होती हैं । 'गे’ (जी) शब्द उनके लिए इस्तेमाल किया जाता है जो एक पुरुष होकर पुरुष की ओर आकर्षित हो । ट्रांसजेंडर (टी) थर्ड जेंडर होते हैं, जिनके जननांग पैदा होते वक्त पुरुष की तरह होते हैं और जिसे लड़का माना जाता है । मगर समय के साथ जब ये लोग बड़े होते हैं और अपने अस्तित्व को पहचनाते हैं तो खुद को लड़की मानते हैं । तो उन्हें 'ट्रांसवुमेन' या परा - स्त्री कहा जाएगा और इसके उलट हो जाए तो उन्हें 'ट्रांसमेन' या परा - पुरुष कहा

जाएगा । इंटर-सेक्स (ऐ) ट्रांसजेंडर का हिस्सा माना जाता है । ये वह लोग होते हैं जिनके पैदा होने के बाद उनके जननांग देखकर ये साफ नहीं हो पाता कि वह लड़का है या लड़की। बहरहाल सारी एल.जी.बी.टी.आई. समुदाय को कुल मिलकर क्वीर (क्यु) समुदाय कहते हैं ।

सिनेमा सामाजिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम हैं । समाज से जुड़े रहकर सामाजिक समस्याओं को जनता तक आसानी से पहुँचाने का कार्य सिनेमा के ज़रिए हो रहे है । क्योंकि सिनेमा सभी प्रकार के लोगों तक आसानी से पहुँच जाती है । फिल्मों से लोग जल्दी प्रभावित भी होते है ।

शोध- प्रबंध की संक्षिप्त रूपरेखा

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में बाँटा गया है-

अध्याय-१ क्वीर : अवधारणा एवं स्वरूप

अध्याय-२ हिन्दी फिल्मों में चित्रित 'लेस्बियन'- संघर्ष एवं समस्याएँ

अध्याय-३ हिन्दी फिल्मों में चित्रित 'गे'- संघर्ष एवं समस्याएँ

अध्याय-४ हिन्दी फिल्मों में निरूपित 'थर्ड जेंडर'-संघर्ष एवं समस्याएँ

अध्याय-५ हिन्दी फिल्मों में क्वीर: अभिव्यक्ति पक्ष

प्रथम अध्याय 'क्वीर : अवधारणा एवं स्वरूप' में 'क्वीर' शब्द और समुदाय का संक्षिप्त परिचय, विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं पर चर्चा की गई है । उप-शीर्षक के अंतर्गत लैंगिक अवधारणा, क्वीर-उद्भव एवं इतिहास, क्वीर-प्रकार, क्वीर- धर्म संबंधी मान्यताएँ, हिन्दी साहित्य में क्वीर विमर्श पर अध्ययन किया गया है ।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक है 'हिन्दी फिल्मों में चित्रित 'लेस्बियन'-संघर्ष एवं समस्याएँ'। इस अध्याय को तीन उप- शीर्षकों में विभाजित करके इसको क्रमशः हिंदी सिनेमा का संक्षिप्त परिचय, शोध के लिए चयनित हिन्दी फिल्मों में चित्रित लेस्बीयन फिल्मों की सूची एवं कथानक को प्रस्तुत करके इन्हें सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, पितृसत्तात्मक, राजनैतिक, धार्मिक परिप्रेक्ष्य के आधार पर उनके संघर्ष एवं समस्याओं का विश्लेष्णात्मक अध्ययन किया गया है ।

तृतीय अध्याय का शीर्षक है 'हिन्दी फिल्मों में चित्रित 'गे'- संघर्ष एवं समस्याएँ'। इस अध्याय को तीन उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है । इसमें 'गे' शब्द के उद्भव और विकास पर चर्चा की गई है । साथ ही, गे मुद्दों पर बनी हिन्दी फिल्मों के कथानक को अध्ययन का हिस्सा बनाते हुए, उनके सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, पितृसत्तात्मक, राजनैतिक और धार्मिक परिप्रेक्ष्य के आधार पर विश्लेषण किया गया है । इस विश्लेषण के माध्यम से उनके अनुभवों और न्यायसंगत अधिकारों का विचारात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय 'हिन्दी फिल्मों में निरूपित 'थर्ड जेंडर' - संघर्ष एवं समस्याएँ' शीर्षक के अंतर्गत भारतीय सिनेमा में थर्ड जेंडर (हिजड़ा/किन्नर समुदाय) के चित्रण और उनके जीवन संघर्षों को गहराई से समझने का प्रयास किया है । प्रस्तुत अध्याय को तीन उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है, जिसमें थर्ड जेंडर के जीवन, समाज में उनकी स्थिति और उनके संघर्षों का विभिन्न दृष्टिकोणों से विश्लेषण किया गया है । इस अध्याय में हिन्दी सिनेमा में थर्ड जेंडर के ऐतिहासिक और समकालीन चित्रण को स्पष्ट करते हुए शोध के लिए चयनित फिल्मों के माध्यम से उनके जीवन और संघर्षों की ओर इशारा किया गया है । इन फिल्मों के कथानक सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और पारिवारिक संदर्भों के आधार पर विश्लेषण किया गया है ।

पंचम अध्याय का शीर्षक 'हिन्दी फिल्मों में क्वीर: अभिव्यक्ति पक्ष' है । इस अध्याय में फिल्म का अर्थ, परिभाषा, भाषा और प्रस्तुतीकरण पर विस्तार से चर्चा की गई है । फिल्म की कला और तकनीकी पक्षों का विश्लेषण करते हुए पटकथा, संवाद, अभिनय, भाषा, संगीत, छायांकन, दृश्य योजना और संपादन का अवलोकन किया गया है ।

'उपसंहार' में निष्कर्ष के तौर पर समूचे अध्ययन का सार प्रस्तुत किया गया है । शोध प्रबंध में 'हिन्दी फिल्मों में चित्रित क्वीर का जीवन संघर्ष एवं समस्याएँ' के संदर्भ में जिन आयामों को खोजा गया है, उनका विवेचन है और शोध प्रबंध का समापन आधार ग्रन्थ सूची, शब्द कोश एवं पत्र-पत्रिकाओं, वेबसाइट के विवरण के साथ प्रस्तुत किया गया है ।

उपसंहार

साहित्य और सिनेमा समाज के सबसे प्रभावशाली साधनों में से हैं, जो बदलाव लाने और उसकी दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विशेष रूप से सिनेमा, अपने दृश्य-श्रव्य स्वरूप के कारण, लोगों तक अधिक प्रभावी रूप से पहुँचता है और समाज पर व्यापक असर डालता है। हिंदी सिनेमा, मनोरंजन का साधन होने के साथ-साथ सामाजिक जागरूकता और लोक शिक्षा का भी एक प्रमुख माध्यम बन चुका है। यह सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती देता है और नए दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। समय के साथ, सिनेमा ने लैंगिक पहचान और यौनिकता को अधिक संवेदनशीलता और यथार्थ के साथ चित्रित करना शुरू किया है।

प्रारंभिक दौर में, हिंदी फिल्मों में क्वीर किरदारों को उपहास और नकारात्मक दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया जाता था, जिससे समाज में उनके प्रति पूर्वाग्रह और भेदभाव को बल मिलता था। हालांकि, समय के साथ इस चित्रण में बदलाव आया और

अधिक संवेदनशील व वास्तविक दृष्टिकोण अपनाया गया। ‘फायर’, ‘अलीगढ़’, ‘मार्गरीटा विद ए स्ट्रॉ’, और ‘एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा’ जैसी फिल्मों ने LGBTQ+ समुदाय के मुद्दों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया। 2018 में भारतीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा धारा 377 को निरस्त किए जाने के बाद, हिंदी सिनेमा में क्वीर पात्रों का चित्रण अधिक वास्तविक, सकारात्मक और बहुआयामी हो गया।

सिनेमा ने समाज में LGBTQ+ समुदाय की पहचान और संघर्षों को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी फिल्मों ने पारिवारिक, धार्मिक और सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती देते हुए समाज में समावेशिता को प्रोत्साहित किया है। LGBTQ+ पात्रों को अब केवल उनके संघर्षों तक सीमित नहीं रखा जा रहा, बल्कि उनके सामान्य जीवन, रिश्तों और खुशियों को भी प्रदर्शित किया जा रहा है। इस बदलाव ने दर्शकों की मानसिकता को प्रभावित किया है और समाज में LGBTQ+ समुदाय के प्रति स्वीकृति बढ़ाने में सहायता की है।

‘अलीगढ़’ और ‘माई ब्रदर निखिल’ जैसी फिल्मों ने समलैंगिकता को संवेदनशीलता और सम्मान के साथ प्रस्तुत किया है। ट्रांसजेंडर व्यक्तियों पर बनी फिल्मों ने उनकी सामाजिक अस्वीकृति, संघर्षों और पहचान की जटिलताओं को प्रभावी ढंग से चित्रित किया है। ‘चंडीगढ़ करे आशिकी’ जैसी फिल्म ने ट्रांसजेंडर पहचान को सामान्य प्रेम कहानियों के समान प्रस्तुत कर समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास किया है। अब LGBTQ+ समुदाय को केवल संघर्षरत व्यक्तियों के रूप में नहीं, बल्कि एक संपूर्ण व्यक्ति के रूप में दिखाया जा रहा है, जिससे उनकी वास्तविकता को अधिक व्यापक रूप से स्वीकार किया जा सके।

सिनेमा ने समाज में LGBTQ+ समुदाय के प्रति मौजूद भेदभाव और पूर्वाग्रहों को कम करने के लिए जागरूकता फैलाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। फिल्मों ने दिखाया है

कि लैंगिक विविधता कोई बीमारी या असामान्यता नहीं, बल्कि एक स्वाभाविक वास्तविकता है। 'एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा' जैसी फिल्मों ने यह संदेश दिया है कि यौनिकता व्यक्तिगत चयन नहीं, बल्कि जन्मजात पहचान है। फिल्मों के माध्यम से परिवारों को यह समझाने में सहायता मिली है कि उनके LGBTQ+ सदस्यों को स्वीकार करना और उनका समर्थन करना अत्यंत आवश्यक है।

एल जी बी टी क्यु + सिनेमा को केवल आर्ट हाउस सिनेमा तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए, बल्कि इसे मुख्यधारा की फिल्मों का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। अब हिंदी फिल्मों में LGBTQ+ किरदारों को अधिक सम्मानजनक और वास्तविक रूप में प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। कानूनी स्वीकृति मिलने के बावजूद, LGBTQ+ समुदाय को सामाजिक स्वीकृति दिलाने के लिए सिनेमा को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। LGBTQ+ विषयों पर बनी फिल्मों को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाने से समाज में समावेशिता और समानता को और अधिक बढ़ावा मिलेगा।

हिंदी सिनेमा ने समावेशन और समानता की दिशा में एक लंबी यात्रा तय की है, लेकिन अभी भी एल जी बी टी क्यु समुदाय के व्यापक प्रतिनिधित्व और स्वीकृति की आवश्यकता बनी हुई है। LGBTQ+ पात्रों को अधिक सशक्त और विविध रूप में प्रस्तुत करने की जरूरत है, ताकि उनकी कहानियाँ सिर्फ संघर्षों तक सीमित न रहें, बल्कि उनकी सफलताओं और खुशियों को भी दर्शाया जाए। हिंदी फिल्मों में LGBTQ+ पात्रों को निभाने वाले कलाकारों की विश्वसनीयता और गहराई ने दर्शकों को प्रभावित किया है। यदि LGBTQ+ समुदाय को अधिक प्रामाणिक और बहुआयामी रूप से प्रस्तुत किया जाए, तो यह समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में सहायक होगा।

अनुसंधान की उपलब्धियाँ

हिंदी सिनेमा में क्वीर समुदाय का प्रतिनिधित्व लंबे समय से एक जटिल विषय रहा है। शुरुआती दौर में एलजीबीटीक्यू+ पात्रों को हास्यप्रद, उपहास के पात्र या खलनायक के रूप में चित्रित किया जाता था। इससे समाज में उनके प्रति गलत धारणाएँ बनीं और उन्हें गंभीरता से नहीं लिया गया। 1990 के दशक के अंत और 2000 के दशक की शुरुआत में, हिंदी फिल्मों में एलजीबीटीक्यू+ समुदाय को अधिक संवेदनशील दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने का प्रयास शुरू हुआ। हालाँकि, उस समय तक इन पात्रों को या तो पीड़ित के रूप में या ट्रैजिक किरदारों के रूप में दिखाया जाता था, जिससे उनकी वास्तविकता का केवल आंशिक प्रतिनिधित्व ही संभव हो सका। 1996 में बनी फिल्म 'फ़ायर' और 2005 में आई 'माई ब्रदर... निखिल' जैसी फिल्मों ने समलैंगिकता पर खुलकर बात करने का साहसिक कदम उठाया। इन फिल्मों ने हिंदी सिनेमा में एलजीबीटीक्यू+ समुदाय की कहानियों को एक नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने की राह दिखाई। फिर भी, समलैंगिक पुरुषों की तुलना में समलैंगिक महिलाओं का चित्रण अपेक्षाकृत कम किया गया। इसके अलावा, ट्रांसजेंडर पात्रों को अक्सर फिल्मों और कहानियों में खलनायक, भिखारी, या मज़ाक के रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा। इससे समाज में उनके प्रति गलत धारणाएँ बनीं और उन्हें गंभीरता से लेने में बाधाएँ उत्पन्न हुईं।

2010 के बाद हिंदी सिनेमा में एलजीबीटीक्यू+ समुदाय का चित्रण अधिक यथार्थवादी और सकारात्मक रूप में होने लगा। यह बदलाव भारतीय समाज में बढ़ती जागरूकता और वैश्विक प्रभावों के कारण संभव हुआ। 2018 में भारतीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा धारा 377 को निरस्त किए जाने के बाद, क्वीर फिल्मों की संख्या और उनकी गुणवत्ता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। यह कानूनी निर्णय हिंदी सिनेमा के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ, जिससे फिल्म निर्माता इस विषय पर अधिक स्वतंत्र रूप से

चर्चा करने लगे। हाल के वर्षों में बनीं 'शुभ मंगल ज़्यादा सावधान' (2020) जैसी फिल्मों ने समलैंगिक प्रेम को मुख्यधारा की रोमांटिक कॉमेडी में शामिल किया। इस प्रकार की फिल्मों को शहरी दर्शकों द्वारा अधिक स्वीकार्यता मिली, लेकिन छोटे शहरों में अब भी इन्हें चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। हिंदी सिनेमा में एलजीबीटीक्यू+ समुदाय का प्रतिनिधित्व अभी भी सीमित है और मुख्यधारा की फिल्मों में इसकी संख्या अपेक्षाकृत कम है। फिर भी, यह कहना गलत नहीं होगा कि हिंदी सिनेमा ने समाज में मौजूद रूढ़ियों को चुनौती देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

एक सकारात्मक प्रवृत्ति यह भी देखने को मिल रही है कि हिंदी फिल्मों में अब धीरे-धीरे क्वीर प्रेम कहानियों को सामान्य प्रेम कहानियों की तरह प्रस्तुत किया जाने लगा है। उदाहरण के लिए, 'अलीगढ़' (2015) ने समाज में समलैंगिकता के प्रति भेदभावपूर्ण रवैये को उजागर किया और इस विषय पर संवेदनशील चर्चा की प्रेरणा दी। हालांकि, ट्रांसजेंडर समुदाय पर केंद्रित फिल्मों की संख्या अभी भी बहुत कम है और उन्हें मुख्यधारा में लाने की आवश्यकता बनी हुई है। एलजीबीटीक्यू+ समुदाय के किरदारों को निभाने वाले मुख्यधारा के कलाकारों की स्वीकृति भी बढ़ रही है, जिससे अधिक वास्तविक और प्रामाणिक चित्रण संभव हो सका है। इसके अलावा, हिंदी सिनेमा में क्वीर पात्रों को उनकी लैंगिक पहचान से परे एक संपूर्ण व्यक्ति के रूप में दिखाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। यह बदलाव दर्शाता है कि अब एलजीबीटीक्यू+ पात्रों को केवल उनकी लैंगिक पहचान तक सीमित नहीं किया जा रहा, बल्कि उनकी व्यक्तिगत कहानियों और संघर्षों को भी गंभीरता से प्रस्तुत किया जा रहा है।

क्वीर केंद्रित फिल्मों को अक्सर आर्ट हाउस सिनेमा या फेस्टिवल फिल्मों तक सीमित रखा गया, जिससे उनकी व्यापक पहुँच सीमित रही। हालाँकि, स्ट्रीमिंग प्लेटफ़ॉर्म (OTT) के उदय ने क्वीर विषयों पर आधारित फिल्मों और वेब सीरीज़ को अधिक दर्शकों

तक पहुँचने का अवसर प्रदान किया। अब यह संभव हो सका है कि संवेदनशील और विविधतापूर्ण कहानियों को बिना सेंसरशिप की चिंता के प्रस्तुत किया जाए। एलजीबीटीक्यू+ सिनेमा ने परिवारों में संवाद की एक नई शुरुआत की है और माता-पिता को अपने क्वीर बच्चों को समझने में मदद की है। फिल्मों के माध्यम से युवाओं को अपनी पहचान को लेकर अधिक आत्मविश्वास और स्वीकृति मिलने लगी है। पहले जहाँ समलैंगिक प्रेम कहानियों को अक्सर ट्रैजिक एंडिंग के साथ प्रस्तुत किया जाता था, वहीं अब सुखद अंत देने की प्रवृत्ति बढ़ी है, जिससे सकारात्मक प्रतिनिधित्व संभव हुआ है।

अंततः, हिंदी सिनेमा धीरे-धीरे ही सही, लेकिन एलजीबीटीक्यू+ समुदाय को अधिक वास्तविक और समानता के आधार पर प्रस्तुत करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। समाज में बदलाव लाने में फिल्मों की शक्ति को नकारा नहीं जा सकता, और इस दिशा में उठाए गए कदम निश्चित रूप से भविष्य में अधिक समावेशी और संवेदनशील सिनेमा को जन्म देंगे। एलजीबीटीक्यू+ विषयों पर आधारित फिल्मों को अधिक समावेशी और विविधतापूर्ण बनाने के लिए नए फिल्म निर्माताओं को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। हिंदी सिनेमा ने एलजीबीटीक्यू+ समुदाय को दृश्यता प्रदान की है, लेकिन सामाजिक स्वीकृति को और बढ़ाने के लिए निरंतर सुधार की आवश्यकता बनी हुई है। जब तक मुख्यधारा की फिल्मों में एलजीबीटीक्यू+ पात्रों को सामान्य किरदारों की तरह नहीं दिखाया जाता, तब तक समाज में उनकी पूर्ण स्वीकृति एक चुनौती बनी रहेगी।

अध्ययन की नई दिशाएँ

वस्तुतः हर शोध विषय की अपनी सीमा होती है । मेरा शोध अपनी सीमा में रहकर सम्पन्न हुआ है । वास्तव में शोध अध्ययन के उपरांत निम्नलिखित विषय उभरकर

सामने आए है जिसमें स्वतंत्र रूप से अनुसंधान की माँग करते है । और शोध कार्य हो सकते है ।-

- भारतीय भाषाओं के फिल्मों में और कथा साहित्य में क्वीर : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
- भारत के विभिन्न भाषाई, सामाजिक, राजनीतिक, और साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में क्वीर का तुलनात्मक अध्ययन
- विश्व के फिल्मों और भारत के फिल्मों में क्वीर का चरित्र चित्रण - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
- हिन्दी क्वीर फिल्मों में चित्रित क्वीर के चरित्र चित्रण का दर्शकों की धारणा पर प्रभाव - एक अनुशीलन
- एल जी बी टी क्यु के मानसिक स्वास्थ्य एवं कल्याण पर हिन्दी फिल्मों का योगदान